भगतसिंह ने कहा

''देश को तैयार करने के भावी कार्यक्रम का शुभारम्भ इस आदर्श वाक्य से होगा—''क्रान्ति जनता के द्वारा जनता के हित में।'' दूसरे शब्दों में, 98 प्रतिशत के लिए स्वराज्य। स्वराज्य जनता द्वारा प्राप्त ही नहीं बल्कि जनता के लिए भी, यह एक बहुत कठिन काम है। यद्यपि हमारे नेताओं ने बहुत से सुझाव दिये हैं, लेकिन जनता को जगाने के लिए कोई योजना पेश करके उसपर अमल करने का किसी ने भी साहस नहीं किया। विस्तार में गये बगैर हम यह दावे से कह सकते है कि अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए रूसी नवयुवकों की भांति हमारे हजारों मेधावी नौजवानों को अपना बहुमूल्य जीवन गांवों में बिताना पड़ेगा और लोगों को समझाना पड़ेगा कि भारतीय क्रान्ति वास्तव में क्या होगी। उन्हें समझाना पड़ेगा कि आने वाली क्रान्ति का मतलब केवल मालिकों की तब्दीली नहीं होगा। उसका अर्थ होगा नयी व्यवस्था का जन्म—एक नयी राजसत्ता। यह एक दिन या एक वर्ष का काम नहीं है। कई दशकों का अद्वितीय आत्मबलिदान ही जनता को उस महान कार्य के लिए तत्पर कर सकेगा और इस कार्य को केवल क्रान्तिकारी युवक ही पूरा कर सकेंगे।''

—भगतसिंह

('विद्यार्थी और राजनीति', जून, 1928 में 'किरती' पत्रिका में प्रकाशित लेख)

एक अपील

'आह्वान कैम्पस टाइम्स' सारे देश में चल रहे वैकल्पिक मीडिया के प्रयासों की एक कड़ी है। हम सत्ता प्रतिष्ठानों, फण्डिंग एजेंसियों, पूंजीवादी घरानों एवं चुनावी राजनीतिक दलों से किसी भी रूप में आर्थिक सहयोग लेना घोर अनर्थकारी मानते हैं। जनता का वैकल्पिक मीडिया सिर्फ जन संसाधनों के बूते खड़ा किया जाना चाहिए—हमारी यह दृढ़ मान्यता है।

अतः हम अपने सभी पाठकों-शुभचिन्तकों-सहयोगियों से अपील करते हैं कि वे अपनी ओर से अधिकतम सम्भव आर्थिक सहयोग भेजकर परिवर्तन के इस हथियार को मजबूती प्रदान करें।

पाठक मंच

शहीदे आजम के विचारों का प्रतिनिधित्व करती है पत्रिका

सर्वप्रथम 'आह्वान' जैसा बेलौस त्रैमासिक निकालने हेतु बधाई। पत्रिका वस्तुतः शहीदे आजम भगत सिंह के विचारों का प्रतिनिधित्व करती है। आद्योपांत समसामयिक एवम् ज्वलंत मुद्दे और अंतिम आवरण पृष्ठ का आह्वान ''उनके लिये जिनकी आत्मा युवा और जिन्दा है" रुचिकर लगा।

मेरी युवावस्था से ही भगत सिंह के प्रति रुचि थी, जो 25 वर्ष की वय होते-होते कुख्यात इमरजेंसी काल में युवा आक्रोश को व्यक्त करने हेतु स्वलिखित नाटक ''भारत के अमर शहीद" के मंचन के माध्यम से प्रस्फुटित हुई। जनपद हरदोई के शाहाबाद नगर में इस नाटक का अब तक 5-6 बार मंचन हो चुका है।

शहीदे आजम के प्रति अपने भावोद्गार रख रहा हूं:

सम्प्रति भगत सिंह!
शहीदे आजम!
सौभाग्यशाली थे तुम,
जो जामे शहादत पीकर
अमर हो गये।
और शायद मूढ़ थे फिरंगी,
जिन्होने तुम्हारे यश की मनोरम सुगंध
देश ही नहीं विश्व में फैलने दी।
भले ही मुट्ठी भर राख
विनष्ट हो गयी।
पर छोटे से यशस्वी जीवन
को मिला भरपूर मूल्य और स्नेह।
किन्तु स्वतंत्र भारत के तुम्हारे
विचारों से अनुप्राणित लोग,
शायद आजाद तो हैं-किन्तु हैं भाग्यहीन।
क्योंकि वे देख रहे हैं-
कि और भी विद्रूप हुआ है,
''मनुष्य द्वारा मनुष्य का
राष्ट्र द्वारा राष्ट्र का शोषण"
छला जा रहा है मेहनतकश,
मजदूर किसान और तुम्हारा सर्वहारा,
बहरों को सुनाने के लिये
धमाके की जरूरत
आज शायद पहले से कहीं
ज्यादा प्रासंगिक है,
दूसरी ओर क्रूर अट्टहास कर
रहा है पूंजीवाद।
समग्र व्यवस्था भी बदतर हई है
और असहाय व दिशाहीन है युवा
क्योंकि आज तुम्हारा अनुसरण
करने वाला घोषित कर दिया जायेगा।
''लोकतंत्र विरोधी" ''देशद्राही"
या फिर पागल
क्योंकि आज देश के ध्वजवाहक-
ये लोकतंत्र के रक्षक हैं बहुत शातिर
इसलिये कहता हूं-
सौभाग्यशाली थे तुम - भगत सिंह।

—जयराम दास रस्तोगी,
लखनऊ

लड़ना तो जिन्दगी है

लड़ना तो जिन्दगी है,
लड़ते ही जाना होगा।
चाहे लाख तूफां आये,
मंजिल को पाना होगा।
चाहे गम की आंधियां हों,
या मुकिलों के बादल।
बढ़ते ही जाना होगा,
बस मुस्कुराना होगा।
लाखों तड़पते इंसान,
मरते हैं मौत के बिन।
सोया हुआ जमाना,
हमको जगाना ड़ोगा।

—पुखराज ''निराला"
मण्डी धनौरा(जे.पी. नगर)

पोटो- एक आफत

वाजपेयी हों या मुर्शरफ या बुश हों सभी अपनी-अपनी सत्ता को मजबूत करने में लगे हैं। ये जनता के सामने नकली आंसू बहाकर सबको मूर्ख बनाते हैं और आतंकवाद के समाधान हेतु नयी-नयी आफत तैयार करते हैं। जिसका सबसे ज्यादा नुकसान आम

(पृष्ठ 32 पर जारी)

(पृष्ठ 5 का शेष)

जनता को ही झेलना पड़ता है। ऐसी ही एक आफत का नाम है—पोटो। पोटो में कहा गया है कि -''आतंकवादियों को बढ़ावा देने वाले हिमायती भी दोषी", तो इससे सबसे पहला नम्बर तो शासक वर्ग का आता है क्योंकि इन्हीं की गलत नीतियों से आतंकवाद पनपता है, जिसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण अमेरिका है, जिसने ओसामा बिन लादेन का पैदा किया।

किसी एक आदमी को मारने से आतंकवादी प्रवृत्ति नष्ट हो जायेगी, इसकी कोई गारण्टी नहीं है।

हो सकता है पोटो लाने वाले लोग यह सोचते हैं कि इसके लागू होने से आम लोगो को परेशानी और भय पैदा होगा और भयवश उनकी विरोध की प्रकृति खत्म हो जायेगी तो यह उनकी भूल है। इतिहास गवाह है कि भय द्वारा चलाया जा रहा शासन ज्यादा दिन तक नहीं टिकता और विद्रोह की भावना और भी बलवती होती है।

वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्था जब तक कायम रहेगी तब तक आतंकवाद किसी न किसी रूप में विद्यमान रहेगा। चाहे इसके लिये कोई भी कानून बनाया जाये।

जब तक मुनाफे के लिये उत्पादन पद्धति का नाश नहीं होता है, तब तक आतंकवाद, अराजकतावाद,मादक द्रव्यों की तस्करी, भ्रष्टाचार इत्यादि समाजद्रोही प्रवृत्तियां कायम रहेंगी और सम्पूर्ण मानव समाज को पतनोन्मुख करेंगी।

यदि वास्तव में हम इन सब बुराइयों को समाप्त करना चाहते हैं तो मुनाफे पर टिकी उत्पादन प्रणाली को बदलना होगा,तभी आतंकवादी विचार, आतंकवाद एवं अराजकतावाद उत्पन्न करने वाले कारण एवं स्रोतों का समापन होगा और एक नवीन,सुन्दर विश्वव्यवस्था की स्थापना होगी।

—माला शुक्ला, सिंघला, गोरखपुर

आह्वान मार्ग प्रशस्त करता है।

जुलाई-सितम्बर का आह्वान पढ़ा। शशिप्रकाश कृत 'अगर तुम युवा हो' की प्रत्येक पंक्ति हृदय को छू गयी। मक्सिम गोर्की की कहानी 'दान्को का जलता हृदय' काल्पनिक धरातल पर प्रतीत होते हुए भी प्रेरित करने की अकथनीय क्षमता से परिपूर्ण थी। वास्तव में आज एक आम आदमी के पास एक हजार एक से भी अधिक कारण हैं कि वह वर्तमान भ्रष्ट एवं पतनोन्मुख व्यवस्था से विद्रोह करे। आज प्रत्येक उपेक्षित नागरिक समाज व सत्ता में परिवर्तन चाहता है। परन्तु इस परिवर्तन हेतु-वह किस दिशा में कदम उठाये, आपका 'आह्वान' इस संबंध में मार्ग प्रशस्त करता है।

इस अंक के पाठक मंच में प्रकाशित 'सहगामिनी' एवं 'स्वतंत्रता' कविताएं मर्मस्पर्शी व वास्तविकता का प्रतिबिम्ब लगीं। मैंने, इसी क्रम में, शिक्षा जगत सम्बन्धी अपने कुछ विचारों को काव्यात्मक अभिव्यक्ति देने का प्रयत्न किया है।

वे, और उनकी नीतियां

वे, शिक्षा को मौलिक अधिकार बना रहे हैं
देश का भविष्य, सुनिश्चित करने को
विश्वविद्यालयों में ज्योतिष पढ़ा रहे हैं
वे खुश हैं; देश को सम्पन्न परिवारों के, अच्छे स्कूलों में पढ़े
सभ्य, जागरूक नागरिक ही चलायेंगे
इसके मद्देनज़र,पाठ्यक्रम नवीनीकरण पर
निरर्थक बहस छेड़ कर
वास्तविक मुद्दे से भटका रहे हैं
टाटा, बिड़ला, अम्बानी के ध्यान मात्र से
जिन्हें हार्दिक प्रसन्नता मिलती है
एक मीटर बरसाती में भूखे पेट, नंगे बदन
आधे कांपते, आधे सोते
पांच जन साक्षात् देखकर भी उनकी
संवेदन ग्रन्थियां नहीं हिलती हैं।

वे नीतियां बना रहे हैं
कि ट्रक से बोरियां उतारने
ढाबे पर कांच के गिलास ध्यान से धोते
कूड़ाघरों से काम का कचरा बीनते
दो वक्त की रोटी को पटाखे, बीड़ियां बनाते
स्कूल जाने की उम्र में, फैक्ट्रियों को जाते
उन्हीं के ऐशो-आराम के सामान जुटाते
गोरी की चूड़ियों पर मनोरम रंग चढ़ाते
अपनी बदरंग जिन्दगी ढोते, चाहते न चाहते
वे नन्हें हाथ, वे उदास चेहरे
स्वतंत्र चिंतन, स्वच्छ मानसिकता के
पतन का पर्याय बन जाए
सरकारी कागजों में
अपना नाम भर लिखना सीख लें
प्रशासन और सरकार से
साक्षरता की भीख लें।
पर नहीं जानते वे
हनन की इन नीतियों के चलते
वंचित तबके जब मिलकर
अपनी जमीन को तलाशने सचेतन
उनसे हिसाब करेंगे
क्रांति के कुछ अध्याय
आने वाली किताबों में मिलेंगे।

—मोनिका 'यामिनी', रोहिणी, दिल्ली

टूट-फूट,बिखराव क्यों?

आह्वान के अंकों में छात्र-छात्राओं के केन्द्रीयकरण पर ध्यान दिया जाय तो अच्छा है। क्योंकि विगत अनेकों वर्षों के अनुभव रहे कि ग्रुपबाजी से एक पार्टी और फिर पार्टी के निर्माण की दुर्दशा हुई। आज हम देख रहे हैं कि भाई-भाई से झंडे डंडे के अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है। आज हम भटके हुए मुसाफिर की तरह चल रहे हैं। न सही सोच है, न समझ और न समझने के लिए तैयार हैं। एक मजबूत केन्द्रीयता न होने के कारण हमलावर ताकतें अपना जाल बखूबी फैला रही हैं। ऐसे समय में मौन रहना हमारी आपसी समझ को सिद्ध कर रहा है। हमें विचार करना पड़ेगा कि यदि हमारी विचारधारा और मंजिल एक है, भले हमारा रास्ता कुछ भी हो, तो आपसी फूट और टकराहट क्यों?

हम आह्वान से चाहते हैं कि सारी छात्रशक्ति का अपनी कलम की ताकत से आह्वान करे ताकि एक केन्द्रीय ताकत के रूप में अपने आप को छात्र संगठित करने में सफल हो सकें। यही प्रक्रिया 'विकल्प' के माध्यम से भी चलायी जा रही है। हो सकता है हमारा सोचना गलत हो, किन्तु पत्र के माध्यम से अवगत कराने का प्रयास करें।

—एस.के.जायसवाल, महरौली, दिल्ली